International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

आत्मनिर्भर भारत निर्माण में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता

आकाश दीप[1] डॉ सीमा पंवार[2]

[1]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, मेरठ कॉलिज, मेरठ
[2]प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, मेरठ कॉलिज, मेरठ

शोध सारांशः
प्रस्तुत शोध पत्र में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के द्वारा दिये गये ''आत्मनिर्भर भारत निर्माण में विचारों का अध्ययन'' किया गया है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की योजनाएं सम्पूर्ण भारतवर्ष के लोगों के विकास के लिए स्थापित की गई हैं, एवं भारत सरकार इनके अम्ल के लिए दृढ़ संकल्पित है। सभी योजनाएँ बहुआयामी उद्देश्य के लिए भारत के स्वर्णिम एवं विकास हेतु अग्रसर है और इन योजनाओं की जानकारी प्रत्येक वर्ग के युवकों, विशेष समुदाय के लोगों के लिए अत्यंत आवश्यक है ताकि इनका लाभ उठाकर प्रत्येक समाज को विकास की ओर अग्रसारित किया जा सके उनकी योजनाओं के माध्यम से भारत के युवा बेरोजगार को उपलब्ध कराने, स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण देने, आवास उपलब्ध कराने, समुचित वर्ग को बिजली व्यवस्था उपलब्ध कराने, शिक्षा एवं स्वास्थ्य व्यवस्था सुधारने, व्यापक विकास के अवसरों को बढ़ाने एवं तमाम अन्य योजनाओं के द्वारा सबको लाभांवित किया जाता है। इन योजनाओं का मुख्य उद्देश्य विकास कौशल, विकास एवं अन्य उपायों के माध्यम से आजीविका के अवसरों में वृद्धि कर शहरी और ग्रामीण गरीबी को कम करना है। कोई भी नीति निर्धारक संगठन या सरकार जो गरीबों के लिए कल्याणकारी योजनाएँ लाना चाहती हैं एवं मानव कल्याण के मार्ग में प्रशस्त होना चाहती हैं उसे पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के एकात्म–मानववाद एवं अंत्योदय के विचार भारत को आत्मनिर्भर बनाने का आधार हैं। वर्तमान भाजपा सरकार की आर्थिक एवं मानव कल्याणकारी नीतियाँ इस दिशा में अत्यंत प्रभावकारी हैं। जिसमें भविष्य की झलक दिखाई देती है। जिससे मानव कल्याण के लिए एक रचनात्मक एवं प्रगतिशील परिस्थितियां उत्पन्न की जा सकें अपितु मानव कल्याण के स्थायी विकास को सकारात्मक दिशा मिल सके।

मुख्य बिन्दुः एकात्म मानववाद, अंत्योदय, केन्द्र–सरकार, मानव कल्याण, योजनाएँ, आत्मनिर्भर।

भूमिकाः
पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय लोकतंत्र के उन पुरोधाओं में से एक हैं, जिन्होंने राष्ट्र की उदारता और भारतीय स्वरूप को गढ़ा तथा इसकी निर्मिति की है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक राष्ट्रवादी चिन्तक के रूप में भी जाने जाते हैं। आपने एकात्म मानववाद के रूप में अपने विचारों की व्याख्या की तथा आत्मनिर्भर भारत के रूप में भी इसे स्थापित करने का प्रयत्न किया ''उन्होंने एकात्म मानववाद के द्वारा आत्मनिर्भर भारत के विचार को जन–जन तक पहुँचाने का प्रयास किया। वो ना केवल वैचारिक चुनौतियों के प्रति सजग थे परन्तु उन चुनौतियों का सामना राष्ट्रवाद के माध्यम से करने के दृढ़ संकल्प भी प्रतीत होते हैं।''[1]

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म 25 सितम्बर 1916 में हुआ था। उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए सीकर से उत्तीर्ण की एवं दो स्वर्ण पदक प्राप्त किए। उन्होंने पुनः इण्टर की परीक्षा में भी प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए दो स्वर्ण पदक प्राप्त किए। उन्होंने प्रथम श्रेणी में स्नातक की भी डिग्री प्राप्त की। पंडित जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 1937 में शामिल होने वाले पहले कुछ स्वयंसेवकों में से तथा अंततः संयुक्त प्रान्तीय प्रचारक बने। वे जनसंघ में 1952 में सम्मिलित हुए एवं 1967 में पार्टी के अध्यक्ष बनने तथा महासचिव के पद पर नियुक्त रहे। डॉ0 श्यामाप्रसाद मुखर्जी के निधन के पश्चात् उन्होंने पार्टी के निर्माण की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले ली एवं इस कार्य में शानदार सफलता अर्जित की। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने लखनऊ के पांचजन्य (साप्ताहिक) एवं स्वदेशी (दैनिक) का सम्पादन किया। उन्होंने चन्द्रगुप्त मौर्य, शंकराचार्य दो उपन्यास हिन्दी में लिखे। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ0 हेडगेवार की मराठी जीवनी का अनुवाद भी किया। 11 फरवरी 1968 को दुःखद परिस्थिति में इनका देहावसान हो गया जो कि पूरे देश के लिए असहनीय क्षति थी।

यह सर्वविदित है कि समय किसी का इंतजार नहीं करता, वह अबाध गति से आगे बढ़ता रहता है जो समय के साथ कदम मिलाकर चलते हैं, प्रगति के पथ पर निरंतर आगे बढ़ते चले जाते हैं और जो समय के साथ–साथ कदम चाल नहीं कर पाते उनका अस्तित्व काल का ग्राफ बनता चला जाता है। लेकिन कुछ विरल व्यक्तित्व ऐसे भी होते हैं जो जीते जी तो समय के साथ कदमचाल करके

अपना सर्वश्रेष्ठ जीवन समाज को समर्पित करते ही है लेकिन मरणोपरान्त उनकी विचारधारा समय की सारी सीमाओं को तोड़कर अजर–अमर रूप में आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बन जाती हैं। ऐसी महान विभूतियों में से एक नाम है– पंडित दीनदयाल उपाध्याय, जिनका व्यक्तित्व व कृतित्व उनके देहावसान के बाद ध्रुव तारे की तरह आज भी सरकार एवं युवा पीढ़ी को ज्ञान पथ पर अग्रसित करता जा रहा है। उन्होंने भविष्य को ध्यान में रखते हुए, प्राचीन भारतीय पारम्परिक ज्ञान प्रणाली का प्रस्ताव रखा जो दुनिया की समकालीन जरूरतों के लिए काफी प्रासंगिक है।

किसी भी राष्ट्र और समाज का उन्नयन केवल नारों या किसी खास विचारधारा से नहीं हो सकता जब तक कि मानवीय संवेदनाओं से ओत–प्रोत ध्येयवादी समर्पित जीवन उसके लिए ना खपे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का जीवन इस कसौटी पर पूर्णतः खरा था। ''उनके एकात्म मानवदर्शन और अंत्योदय के सिद्धान्त में परस्पर आत्मनिर्भरता की बात कही गई है। व्यक्ति, परिवार, समाज, प्रदेश, देश, दुनिया और ब्रह्माण्ड सब एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं सबको एक तत्व जोड़ता है सब परस्पर निर्भर है जो आत्मनिर्भर भारत की ओर केन्द्रित है।''[2]

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के आत्मनिर्भर सम्बन्धी विचारः–

- **पुराने अनुभव संबंधी विचार–** हजारों वर्षों में जो कुछ हमने अनुभव अर्जित किया है, वह विवशता में हमें प्राप्त हुआ या हमारी इच्छानुसार मिला, उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते हैं। बाहरी शक्तियों के विरोध के फलस्वरूप हमने जो परिस्थितियों से लड़कर जीवन निर्माण के लिए प्रयास किया है, उस जीवन को भुला नहीं सकते हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने कहा है कि ''जो लोग हमारी प्रगति का आधार पश्चिम की विचारधाराओं को अपनाकर चलना चाहते हैं, वे यह भूल जाते हैं कि वे सभी विचारधाराएँ एवं परिस्थिति विशेष तथा प्रवृत्ति विशेष की उपज हैं जो अनिवार्य रूप से सर्वव्यापी नहीं हो सकती है। हमारी प्रगति के लिए यह आवश्यक है कि हमें उन विचारधाराओं को आत्मसात् करना चाहिए जो हमारी परिस्थितियों के अनुरूप हो।''[3]
- **पंडित जी के नैतिकता संबंधी विचार–** पंडित ने कहा है कि ''नैतिकता के सिद्धान्तों को कोई एक व्यक्ति नहीं बनाता है बल्कि इनकी खोज की जाती है अर्थात नैतिकता से तात्पर्य है– जीवन के नियम/आज की आवश्यकता है अपने व्यवहार में पारदर्शिता लाने की। नैतिकता को धर्म के रूप में स्वीकारो''[4] स्वभाव को धर्म के सिद्धान्तों के अनुसार व्यवहारगत बनाओ एवं उसमें से संस्कृति व सभ्यता प्रस्फुटित होंगे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के ये विचार पश्चिमी विज्ञान और पश्चिमी जीवनशैली दोनों को अलग करके देखो। आगे बढ़ने के लिए पश्चिमी विज्ञान को अपनाओ लेकिन पश्चिम जीवनशैली एवं मूल्य हमें निश्चित ही पतन के गर्त में डाल देंगे।
- **पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के सांस्कृतिक विचार–** भारतीय संस्कृति का सार है, व्यक्तियों में धर्म, अर्थ, और मोक्ष की जन्मजात लालसा और इनकी संतुष्टि। वे इनकी संतुष्टि के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने का समर्थन करते हैं तथा विविधता में एकता के मंत्र के पक्षधर हैं। उन्होंने कहा है कि ''आजादी सार्थक तभी हो सकती है जब यह हमारी संस्कृति की अभिव्यक्ति का साधन बन जाए। हमारी संस्कृति जोड़ने में विश्वास रखती है, तोड़ने में नहीं। समय आ गया है पश्चिमी संस्कृति के रंग में रंगी हमारी युवा शक्ति को नींद से जगाने का, उन्हें अपने प्राचीन मूल्य विश्वासों से रूबरू कराने का, स्वदेशी खानपान व योग को अपनाने का।''[5] वर्तमान समय में यह आवश्यक हो गया है कि हमें भारतीय संस्कृति के सिद्धान्तों के बारे में मानवीय व राष्ट्रीय, दोनों तरह से विचार करें।
- **सामाजिक संदर्भ में पंडित जी के विचार–** भारत में सामाजिकता का मूल मंत्र है, व्यावहारिकता। व्यक्ति को एकीकृत प्रगति को हासिल करने के लिए स्वयं से पहले शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा की चौगुनी आवश्यकताओं की पूर्ति का आदर्श सामने रखना चाहिए। अपनी शक्ति को अनावश्यक व्यवहार में व्यर्थ न करें बल्कि विनियमित कार्रवाई में निहित करें। हर मानव में दोनों प्रवृतियां होती हैं– एक ओर क्रोध और लालच तो दूसरी ओर प्रेम और बलिदान।
- **पंडित जी के धार्मिक विचार–** पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने कहा है कि ''धर्म एक बहुत व्यापक अवधारणा है जो समाज को बनाए रखने को सभी पहलुओं से संबंधित है। अंग्रेजी का शब्द Religion धर्म के लिए सही शब्द नहीं है Religion का मतलब एक पंथ या संप्रदाय है।''[6] इसका मतलब धर्म से तो बिल्कुल नहीं है। इसके लिए निकटतम समान अंग्रेजी शब्द जन्मजात कानून Innate Law हो सकता है धर्म तो सर्वोच्च है और हर राजा के लिए आदर्श ''धर्म का राज्य'' होना चाहिए क्योंकि जब राजनीतिक और आर्थिक शक्तियां समाहित हो जाती है तब धर्म की गिरावट होती है।
- **पंडित जी के राजनीतिक विचार–** जब हम पर अंग्रेज शासन कर रहे थे, तब हमने उनके विरोध में गर्व का अनुभव किया, लेकिन हैरत की बात है कि अब अंग्रेज चले गए, पश्चिमीकरण प्रगति का पर्याय बन गया है। उनके ये शब्द आज भी हमें बार–बार चेता रहे हैं। मुखर आवाज में की गई उनकी अभिव्यक्ति सिद्धान्तहीन अवसरवादी लोगों ने हमारे देश की राजनीति की बागडोर संभाल रखी है, जिसने लोगों के विश्वास को हिला दिया है पंडित जी ने कहा है कि ''सालोसाल भारतीय जनता के कानों में गूंजती रही।''[7] उनका सार्वभौमिक संदेश– ''व्यक्ति को वोट दें, बटुए को नहीं, पार्टी को वोट दें, व्यक्ति को नहीं, सिद्धान्त को वोट दें,

पार्टी को नहीं, जन–जन में राजनीतिक चेतना का संचार करता प्रतीत हो रहा है।''[8] पं0 दीनदयाल जी के लिए **डॉ0 श्यामाप्रसाद मुखर्जी** के द्वारा कहे गए शब्द– ''यदि मेरे पास दो दीनदयाल हो तो मैं भारत का राजनीतिक चेहरा बदल सकता हूँ।''[9]

- **पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के राष्ट्रीय विचार–** भारत की मूलभूत समस्याओं का प्रमुख कारण है अपनी राष्ट्रीय पहचान की उपेक्षा। राष्ट्रीय पहचान के बिना आजादी का कोई अर्थ नहीं है लोगों की अन्तरात्मा को जगाने के लिए उनका यह वाक्य आज भी उतना ही सार्थक है जितना कि स्वतंत्रता प्राप्ति के समय था उन्होंने कहा कि ''एक राष्ट्र लोगों का एक समूह होता है जो एक लक्ष्य, एक आदर्श, एक मिशन के साथ जीते हैं और एक विशेष भू–भाग को अपनी मातृभूमि के रूप में देखते हैं। यदि आदर्श या मातृभूमि दोनों में से किसी एक का भी लोप हो जाए तो एक राष्ट्र संभव नहीं हो सकता।''[10]
- **पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म सम्बन्धी विचार–** अपने विचारों को उत्कृष्टता के स्तर पर पहुंचाते हुए पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने अपना सर्वश्रेष्ठ विचार एकात्मकता के रूप में प्रस्तुत किया है। एकात्म को दर्शाता विचार–विविधता में एकता और विभिन्न रूपों में एकता की अभिव्यक्ति भारतीय संस्कृति की विचारधारा में बसी हुई है। उनके दर्शन की सर्वश्रेष्ठ झलक प्रस्तुत करता है।

  उपाध्याय जी ने सार्वभौमिक संदेश देते हुए कहा है कि ''बीज की एक इकाई विभिन्न रूपों में प्रकट होती है, जड़े, तना, शाखाएँ, पंक्तियाँ, फूल और फल। इन सबके रंग और गुण अलग–अलग होते हैं, फिर भी बीज के द्वारा हम इन सबके एकत्व के रिश्ते को पहचान लेते हैं।''[11] ठीक इसी तरह भारत विविधताओं से भरा देश है, चाहे वह भाषा की हो, खानपान की हो, रहन–सहन की हो, वेशभूषा की हो, इतना होने पर भी हम सब पहले भारतीय हैं बाद में कुछ और। उनका एकात्मक दर्शन कहता है– जीवन में विविधता और बहुलता है लेकिन हमने हमेशा उनके पीछे छिपी एकता को खोजने का प्रयास निरन्तर करते रहना चाहिए।
- **पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के धर्मनिरपेक्षता सम्बन्धी विचार–** भारत में विभिन्न धर्म संप्रदायों से जुड़े लोगों की कर्म स्थली है। विभिन्न लेखों, पुस्तकों, ग्रन्थों एवं शोध–पत्रों में लिखा मिलता है कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है, लेकिन आधुनिक परिप्रेक्ष्य में यह शब्द आत्मा में चुभता–सा प्रतीत होता है। आज विभिन्न धर्मों के अनुयायी केवल अपने धर्म की पताका फहराने की बात करते हैं और दूसरे धर्म–संप्रदाय के लोगों को नीचा दिखाने की हर संभव कोशिश की जाती है। इसी संदर्भ में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने विचार दिया था कि ''मुस्लमान हमारे शरीर और हमारे खून का खून हैं।''[12] प्रस्तुत पंक्तियाँ धर्मनिरपेक्षता का बहुत बड़ा संदेश छुपाए हुए है और आज की पीढ़ी के लिए स्पष्ट संदेश दे रही है कि–

  ''धर्म, जाति के बंधन से, मुक्ति पा ले ए इंसान।
  सही रूप में तभी बनेगा तेरा भारत देश महान।।''[13]

भारतीय संस्कृति की जड़ इतनी गहरी और मजबूत है, जो अनेक विपरीत परिस्थितियों के बावजूद आज भी कायम है। इसके दम पर भारत आज भी विश्व गुरू बनने के मार्ग पर अग्रसर है।

सबका साथ–सबका विकासः–

वर्तमान भारतीय सरकार द्वारा शुरू किया गया है जिसका उद्देश्य है कि हम पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलें और एक विकसित एवं न्यायपूर्ण भारत के स्वप्न को पूरा करने के लिए मिलकर काम करें, जहाँ सबसे गरीब व्यक्ति का भी ध्यान रखा जाए। जनसंघ और उसके उत्तराधिकारी के रूप में भारतीय जनता पार्टी आज पंडित दीनदयाल उपाध्याय के प्रेरणापूर्ण जीवन और दर्शन पर चलते हुए देश की राजनीति का केन्द्रबिन्दु बन गयी है। **''सबका साथ–सबका विकास''** में सर्वांगीण पुनर्रचना के लक्ष्य का हासिल करने के लिए सबसे पहले आर्थिक असमानता, भेदभाव एवं विषमताओं को समाप्त करना उसका सबसे बड़ा लक्ष्य है। **''सबका साथ– सबका विकास''** में विकास के साथ–साथ समानता, स्वतंत्रता एवं गरिमापूर्ण जीवन की भावना भी है।

देश में आधारभूत सुविधाओं के प्रमुख मानक– सामाजिक सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा, आवास, पेयजल, स्वच्छता कदम उठाए हैं जो पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म–मानववाद दर्शन के उद्देश्यों के ''**अंत्योदय** के सिद्धान्त के अनुसार गरीबों के कल्याण हेतु पूर्ण मनोयोग से कार्य करें''[14] अनुकूल है। एकात्मक–मानववाद के रूप में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने भारत को तत्कालीन राजनीति और समाज को उस दिशा में मुड़ने की सलाह दी है जो सौ प्रतिशत भारतीय है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कहा था– वे लोग जिनके सामने रोजी–रोटी का सवाल है जिन्हें न रहने के लिए मकान है, ना तन ढकने के लिए कपड़ा, उनको सुखी और सम्पन्न बनाना हमारा लक्ष्य है। उन्होंने आर्थिक लोकतंत्र का सिद्धान्त दिया उनका कहना था जिस प्रकार प्रत्येक व्यस्क नागरिक को मतदान का अधिकार है ठीक उसी तरह लोगों को कार्य करने को मिलना चाहिए, उनको रोटी पैदा करने की ताकत देनी चाहिए, लोगों को सक्षम बनाना चाहिए ताकि वे अपनी जरूरतों को पूरा कर सकें। ''राजनीति उनके लिए साध्य नहीं, समाज सेवा का साधन मात्र थी।''[15]

वर्तमान सरकार ने देश में आर्थिक सशक्तिकरण के इन मानकों को प्राप्त करने के लिए जहाँ एक ओर आधार कानून के द्वारा व्यवस्था की पारदर्शिता को उत्तरदायी बनाया जा रहा है वहीं अनेक योजनाओं के द्वारा जैसे उज्जवला योजना, दीनदयाल ग्राम ज्योति

योजना, स्वच्छता अभियान जैसे कार्यक्रमों में जन सहभागिता द्वारा देश में एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण हो रहा है। गरीब एवं वंचित वर्ग के आर्थिक समावेशन के लिए जन–धन अभियान एवं सभी वर्गों के लिए बीमा के माध्यम से सामाजिक सुरक्षा की योजनाएं, अन्त्योदय की दिशा में मील का पत्थर साबित हो रही हैं, सभी के लिए आवास एवं हर हाथ को काम, हर खेत को पानी के लक्ष्य को पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारों के अनुरूप प्राथमिकता प्रदान की जा रही है।

- पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों से प्रेरित होकर केन्द्र सरकार के द्वारा **"स्किल इण्डिया मिशन"** की शुरूआत की गयी। जिसके अन्तर्गत कौशल विकास और अन्य उपायों के माध्यम से आजीविका के अवसरों में वृद्धि कर शहरी और ग्रामीण गरीबी को कम करना है। भारत सरकार ने इस योजना पर 500 करोड़ रूपये खर्च करने का लक्ष्य रखा था।
- केन्द्र सरकार ने एक कार्यक्रम **"मेक इन इण्डिया"** 25 दिसम्बर 2014 को शुरू किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बहुराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय कम्पनियों को भारत में अपने उत्पादकों के निर्माण के लिए प्रोत्साहित करना तथा रोजगार सृजन एवं कौशल वृद्धि पर ध्यान केन्द्रित करना है। यह कार्यक्रम वैश्वीकरण के इस दौर में भारत के निर्माण और रोजगार के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होने वाला कार्यक्रम है।
- **स्टार्टअप इण्डिया** की शुरूआत 5 अप्रैल 2016 को की गयी इस योजना के अन्तर्गत नई कम्पनियाँ स्थापित करने हेतु दस लाख से एक करोड़ तक का ऋण देना सुनिश्चित किया गया। इस योजना के माध्यम से उस वर्ग को आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश की गई जो लम्बे समय से हाशिए पर था।
- **पंडित दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण ज्योति योजना** 20 नवम्बर 2014 को प्रारम्भ की गयी। योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण भारत को रोशनी से जगमग कराना है और गैर–फीडर के माध्यम से समुचित बिजली का प्रबन्ध कर फसलों की उत्पादकता को बढ़ाया जाना है ताकि किसान वर्षा पर निर्भर न रहें एवं फसलों के उत्पादन का उचित मूल्य उन्हें प्राप्त हो सके।
- **पंडित दीनदयाल ग्रामोद्योग रोजगार योजना** के द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती बेरोजगारी का समाधान करने, ग्रामीण शिक्षित बेरोजगार नवयुवकों का शहरों की ओर पलायन को रोकने तथा अधिक से अधिक रोजगार का अवसर गाँव में ही उपलब्ध कराना, पंडित दीनदयाल ग्रामोद्योग रोजगार योजना का मुख्य अंश है **"एक जनपद–एक उत्पाद"** योजनान्तर्गत स्थापित उद्योगों को नवीन तकनीक के साथ–साथ उनकी वित्तीय एवं आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने के निहितार्थ प्रवेश के ग्रामीण क्षेत्रों के व्यक्तिगत उद्यमियों को उत्प्रेरित करने के उद्देश्य से पंडित दीनदयाल ग्रामोद्योग रोजगार योजना की संरचना की गयी है।
- **पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्वनियोजन योजना** भारत के प्रधानमंत्री **नरेन्द्र मोदी जी** ने समय की मांग के अनुसार नई–नई योजना प्रारम्भ कीं। भारत में विभिन्न आर्थिक स्तर के लोग निवास करते हैं जिस वजह से यहां के लोगों को विभिन्न शर्तों के साथ योजनाओं की आवश्यकता पड़ती है। देश के ग्रामांचल के विकास के लिए सरकार अधिक ध्यान केन्द्रीत कर रही है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्वनियोजन योजना भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा आरम्भ की गयी योजना है, जो ग्रामांचलों के लोगों को स्वरोजगार के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करती है।
- **पंडित दीनदयाल विकलांग पुनर्वास योजना** विकलांगों/दिव्यांगों को समाज में समान स्तर के अवसर, सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण करने के उद्देश्य से भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा दीनदयाल विकलांग पुनर्वास योजना की शुरूआत की।
- **पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्रमेव जयते योजना** भारत के आदरणीय माननीय प्रधानमंत्री **श्री नरेन्द्र मोदी जी** ने 16 अक्टूबर 2014 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्रमेव जयते कार्यक्रम का विज्ञान भवन में शुभारम्भ करते हुए कहा कि "राष्ट्र निर्माण के लिए श्रम की जरूरत है।"[16] हमने आज तक श्रम को उचित दर्जा नहीं दिया है। हमें अब श्रमिकों के प्रति दृष्टिकोण बदलना होगा। हमारा श्रमिक श्रम योगी है और उनके अनुसार **सत्यमेव जयते** में जितनी ताकत है **श्रमेव जयते** में भी है। हमें श्रमिकों को सम्मान देने की आवश्यकता है।
- **पंडित दीनदयाल अंत्योदय योजना** दीनदयाल अंत्योदय योजना का उद्देश्य कौशल विकास और अन्य उपायों के माध्यम से आजीविका के अवसरों में वृद्धि कर शहरी और ग्रामीण गरीबी को कम करना है। दीनदयाल अंत्योदय योजना को आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय के तहत शुरू किया गया था। भारत सरकार ने इस योजना के लिए 500 करोड़ रूपये का प्रावधान किया है। यह योजना राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन का एकीकरण है। राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन को दीनदयाल अंत्योदय योजना और हिन्दी में राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन के नाम से भी जाना जाता है।
- **प्रधानमंत्री वय वन्दना योजना** प्रधानमंत्री वय वंदना योजना का शुभारम्भ अनिश्चित बाजार स्थितियों के कारण 60 वर्ष से अधिक आयु के वृद्धों की ब्याज आय में भविष्य में होने वाली कमी के प्रति सुरक्षा प्रदान करने के साथ–साथ तथा उन्हें सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध कराने के लिए किया गया था। इस योजना को भारतीय जीवन बीमा निगम के माध्यम से कार्यान्वित किया जा रहा है और यह योजना अभिदान के लिए 31 मार्च 2023 तक खुली रही थी।

- **आत्मनिर्भर भारत रोजगार योजना,** यह योजना 12 नवम्बर 2020 को हमारे देश की वित्त मंत्री **निर्मला सीतारमण जी** के द्वारा आत्मनिर्भर भारत रोजगार योजना का आरम्भ किया गया है। इस योजना को कोविड–19 काल से उभर रहे भारत में रोजगार को बढ़ावा देने के लिए आरंभ किया गया है। आत्मनिर्भर भारत रोजगार के अंतर्गत सरकार द्वारा उन सभी प्रतिष्ठानों को सब्सिडी प्रदान की जाएगी जो नई भर्तियां करेंगे। इस योजना का मुख्य उद्देश्य नए रोजगार को प्रोत्साहन देना है। आत्मनिर्भर भारत रोजगार योजना के माध्यम से देश में रोजगार बढ़ेंगे।
- **ऑपरेशन ग्रीन योजना,** भारत सरकार द्वारा कोरोना काल के चलते ऑपरेशन ग्रीन योजना के दायरे को बढ़ाया गया। आत्मनिर्भर भारत अभियान के अन्तर्गत केन्द्र सरकार के खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय द्वारा ऑपरेशन ग्रीन योजना को संचालित किया गया था इस योजना के अन्तर्गत फल और सब्जियों का उचित मूल्य सरकार द्वारा प्रदान किया गया था। इस योजना के लिए सरकार ने 500 करोड़ का बजट निर्धारित किया था।
- **मत्स्य सम्पदा योजना,** सरकार द्वारा सन् 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। इसी बात को ध्यान में रखते हुए सरकार ने मत्स्य सम्पदा योजना का आरम्भ किया है। मत्स्य सम्पदा योजना का उद्देश्य सरकार द्वारा मत्स्य पालन क्षेत्र का निर्यात बढ़ाना है। इस योजना के माध्यम से मत्स्य पालन तथा डेरी से जुड़े किसानों की आय को बढ़ाने का प्रयास किया। मत्स्य सम्पदा योजना के लिए सरकार ने 20,000 करोड़ रूपये का बजट निर्धारित किया था। इस योजना के अन्तर्गत समुंद्र तथा तालाब में मछली पालन पर भी जोर दिया।
- **आयुष्मान भारत योजना,** इस योजना के अन्तर्गत सरकार देश के नागरिकों को अच्छे स्वास्थ्य सेवाएं, स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध कराना चाहती है तथा योजना के कार्य के लिए सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं। **प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत योजना** के अन्तर्गत केन्द्र सरकार प्रत्येक लाभार्थी परिवार को 5,00,000 तक का स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध कराती है तथा उनको इस लायक बनाती है कि वह अस्पतालों में गंभीर बीमारियों का इलाज निःशुल्क करा सकें।
- **अंत्योदय अन्न योजना,** अंत्योदय अन्न योजना की शुरूआत केन्द्र सरकार द्वारा देश के गरीब परिवारों को लाभ पहुंचाने के लिए की गयी है। इस योजना के अन्तर्गत अंत्योदय राशन कार्ड धारकों को सरकार द्वारा प्रतिमाह 35 किलो राशन प्रदान किया गया। केन्द्र सरकार ने इस योजना के अन्तर्गत एक और फैसला लिया है कि देश के गरीब परिवारों के साथ–साथ दिव्यांगों को भी इस योजना के अन्तर्गत हर महीने 35 किलो अनाज (गेहूँ) 2 रूपये प्रति किलोग्राम और धान (चावल) 3 रूपये प्रति किलोग्राम के हिसाब से प्रति परिवार को दिया जाएगा। अंत्योदय अन्न योजना मुख्य रूप से गरीबों के लिए आरक्षित है, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के गरीब परिवारों को इस योजना का लाभ प्रदान किया जाएगा। केन्द्रीय मंत्री **रामविलास पासवान जी** का कहना है कि ''अंत्योदय अन्न योजना राशन कार्ड और प्राथमिकता वाले परिवार कि राशन कार्ड के अन्तर्गत कौन लाभार्थी होंगे, इसकी जवाबदेही राज्य सरकार के पास है।''[17]
- **प्रधानमंत्री उज्जवला योजना**, **''स्वच्छ ईंधन–बेहतर जीवन''** के नारे के साथ केन्द्र सरकार ने 1 मई 2016 को माननीय प्रधानमंत्री **श्री नरेन्द्र मोदी जी** के नेतृत्व में एक सामाजिक कल्याण योजना **''प्रधानमंत्री उज्जवला योजना''** की शुरूआत की है। यह योजना एक धुआँ रहित ग्रामीण भारत की परिकल्पना करती है और वर्ष 2019 तक 5 करोड़ परिवारों, विशेषकर गरीबी रेखा से नीचे रह रही महिलाओं को रियायती एलपीजी कनेक्शन उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखती है। योजना से एलपीजी के उपयोग में वृद्धि होगी और स्वास्थ्य संबंधी विकार, वायु प्रदूषण एवं वनों की कटाई को कम करने में मदद मिलेगी।
- **प्रधानमंत्री सौभाग्य योजना,** देशवासियों की समस्याओं को समझते हुए केन्द्र सरकार योजनाओं को बनाती है और उन तक लाभ पहुँचाने के लिए हर संभव प्रयास करती है देश में आज भी बहुत से ऐसे परिवार हैं जहां तक बिजली नहीं पहुंच पाई है ऐसे घरों को रोशन करने के लिए देश के प्रधानमंत्री **श्री नरेन्द्र मोदी जी** के द्वारा इस योजना की शुरूआत पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती के मौके पर 25 सितम्बर 2017 को की गयी थी। देश के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में निवास कर रहे आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के परिवारों के लिए इस योजना को तैयार किया गया। जिन परिवारों का नाम वर्ष 2011 की सामाजिक–आर्थिक जनगणना में शामिल है, उन्हें इस योजना के माध्यम से मुक्त बिजली कनेक्शन प्रदान किया जाएगा।
- **उजाला योजना,** भारत सरकार के तहत 1 मई 2015 को प्रधानमंत्री **नरेन्द्र मोदी जी** के द्वारा उजाला योजना शुरू की गयी थी। उजाला योजना की स्थापना बचत लैंप योजना के स्थान पर की गई जो भारत सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम ऊर्जा दक्षता सेवा लिमिटेड की केन्द्रीय ऊर्जा मंत्रालय और बिजली वितरण कम्पनी के तहत एक संयुक्त पहल है। उजाला योजना एलईडी लाईट के वितरण पर केन्द्रित है क्योंकि प्रकाश उत्सर्जक डायोड किसी भी साधारण लाइट की तुलना में ऊर्जा का केवल दसवाँ हिस्सा खपत करके बेहतर प्रकाश उत्पादन प्रदान करते हैं। इस योजना का उद्देश्य उपभोक्ताओं को 20 वाट की एलईडी लाइट वितरित करना भी है जो नियमित 40 वाट की एलईडी लाइटों की तुलना में 50 प्रतिशत अधिक ऊर्जा कुशल है।

निष्कर्ष:

दीनदयाल उपाध्याय का चिंतन शाश्वतधारा से जुड़ता है। इसके आधार पर वह राष्ट्रभाव को समझने का प्रयास करते हैं।

समस्याओं पर विचार करते हुए, उनका समाधान निकालते हैं। यह तथ्य ही भारत के अनुकूल प्रमाणित होता है। ऐसे में पहली बात यह समझनी होगी कि अन्य विचारों की भाँति पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कोई वाद नहीं बनाया। एकात्म मानव, अंत्योदय जैसे विचार वाद की श्रेणी में नहीं आते बल्कि इसे एक दर्शन माना गया है। यहां **जॉन बुकन** का कथन स्पष्ट सिद्ध होता है कि ''हम भूत के ऋण से मुक्त हो सकते हैं, यदि हम भविष्य को अपना ऋणी बनाएं।''[18]

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का ध्येय वाक्य **''चरैवेति–चरैवेति था''** जो राजनीति में लगातार देश हित में काम करने का प्रेरणादायी आह्वान था जो देश हित की इच्छा में देशभक्ति के संकल्प के साथ समाज को एकात्मकता के भाव के साथ जोड़कर लगातार काम करने को प्रेरित करता है, उनका कहना था कि ''जीवन में विविधता और बहुलता है लेकिन हमने हमेशा इनके पीछे छिपी एकता को खोजने का प्रयास किया है''[19] पंडित दीनदयाल जी के अनुसार भारतीय आदर्श **''वसुधैव कुटुम्बकम''** राष्ट्रीय के साथ विश्वबन्धुत्व का भाव है। वर्तमान सरकार इसी एकता को **''सबका साथ–सबका विकास''** के साथ चलकर सम्भव बनाने का प्रयास कर रही है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी अंत्योदय की बात करते थे उनके मन में कतार में खड़े अन्तिम व्यक्ति अर्थात समाज के सबसे निचले वर्ग तक खुशहाली और समृद्धि का प्रकाश पहुँचाने की चिन्ता का ही प्रतिफल है कि वर्तमान में जब केन्द्र में उसी दल की सरकार है जिसकी नींव की पहली ईंट रखने में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का योगदान था। इस स्थिति में उनके विचारों का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। योजनाओं के माध्यम से सरकार ने अन्तिम व्यक्ति को सक्षम एवं स्वावलम्बी बनाने की दिशा में कार्य को आगे बढ़ाया है।

आज अगर केन्द्र सरकार की विकास यात्रा के केन्द्र में ''**सबका साथ– सबका विकास**'' की मूल भावना नजर आती है तो प्रेरणा स्रोत के रूप में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार ही दिखाई पड़ते हैं। उनका मानना था कि जब तक व्यक्ति आर्थिक रूप से सक्षम नहीं होगा वह राजनीतिक रूप से स्वतंत्र नहीं हो सकता। वर्तमान सरकार प्रत्येक व्यक्ति को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में जिन प्रयासों पर सतत् काम कर रही है वह कार्य इन्हीं विचारों से ओत–प्रोत नजर आते हैं। पंडित जी ने अपने चिन्तन में प्रत्येक व्यक्ति से जुड़ी जिन चिन्ताओं और समाधानों को समझाने का प्रयास दशकों पहले किया था, आज भारत सरकार द्वारा उन्हीं विचारों को केन्द्र में रखकर नीतियों का निर्माण किया जा रहा है।

सन्दर्भ सूची:–

1. डॉ0 मनोज कुमार सक्सेना, ''पंडित दीनदयाल उपाध्याय एकात्म मानव दर्शन– विविध आयाम'', अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, संस्करण–2018, पृष्ठ सं0 103
2. शरद सिंह, ''राष्ट्रवादी व्यक्तित्व दीनदयाल उपाध्याय'', सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण–2015, पृष्ठ सं0 68
3. डॉ0 महेशचन्द्र शर्मा, ''पं0 दीनदयाल उपाध्याय कर्तव्य एवं विचार'', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2017, पृष्ठ सं0 304
4. कौशल किशोर मिश्र, ''पं0 दीनदयाल उपाध्याय का सांस्कृतिक चिन्तन'', के0के0 पब्लिकेशन, दिल्ली, संस्करण–2021, पृष्ठ सं0 47
5. डॉ0 महेशचन्द्र शर्मा, ''पं0 दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वाङ्मय'', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2016, पृष्ठ सं0 03
6. डॉ0 महेशचन्द्र शर्मा, ''पं0 दीनदयाल उपाध्याय कर्तव्य एवं विचार'', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2017, पृष्ठ सं0 169
7. जनसत्ता, नई दिल्ली, 27 अगस्त 2022, पृष्ठ सं0 08
8. डॉ0 मनोज कुमार सक्सेना, ''पंडित दीनदयाल उपाध्याय एकात्म मानव दर्शन– विविध आयाम'', अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, संस्करण–2018, पृष्ठ सं0 152
9. उपर्युक्त, पृष्ठ सं0 36–37
10. कौशल किशोर मिश्र, ''पं0 दीनदयाल उपाध्याय का राष्ट्र गौरव के प्रति दृष्टिकोण'', राहुल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, संस्करण–2021, पृष्ठ सं0 39
11. https://en.wikipedia.org/Deendayal Upadhyaya, 24 सितम्बर 2023 9:17 Am
12. शरद सिंह, ''राष्ट्रवादी व्यक्तित्व दीनदयाल उपाध्याय'', सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण–2015, पृष्ठ सं0 50
13. डॉ0 मनोज कुमार सक्सेना, ''पंडित दीनदयाल उपाध्याय एकात्म मानव दर्शन– विविध आयाम'', अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, संस्करण–2018, पृष्ठ सं0 105
14. https://www.bjp.org, 29 सितम्बर 2023, 4:42 Pm
15. महात्मा गांधी, ''हिन्द स्वराज्य'', सर्वसेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण–2000, पृष्ठ सं0 58
16. www.gyonipandit.com, 23 जौलाई 2023, 11:23 Am
17. पूजा सिंह, ''आधुनिक भारतीय लोकतंत्र और पं0 दीनदयाल उपाध्याय के विचार'', IJSRST, खण्ड–03, इश्यू–08, 15 नवम्बर 2017
18. डॉ0 मनोज कुमार सक्सेना, ''पंडित दीनदयाल उपाध्याय एकात्म मानव दर्शन– विविध आयाम'', अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली,

संस्करण–2018, पृष्ठ सं0 98
19. डॉ0 महेश चन्द्र शर्मा, ''पं0 दीनदयाल उपाध्याय कर्तव्य एवं विचार'', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2017, पृष्ठ सं0 26